शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2013

स्वामी विवेकानन्द और उनका शिक्षा दर्शन

डा बलबीर सिंह जमवाल, प्रिंसिपल,
बी.के.एम. कालेज आफ एजुकेशन, बलाचोर,
जिला एस.बी.एस. नगर, (पंजाब)

शोध संक्षेप

स्वामी का उपदेश मानना प्रत्येक शिष्य का धर्म माना जाता है, यही हमारी भारतीय संस्कृति है। आजतक जितने भी महान साधु संत महात्मा, बुद्धिजीवी और नेता हुए सबने अपने गुरुओं द्वारा बताये गये उपदेशों पर चलकर महानता प्राप्त की। स्वामी विवेकानन्द जी भी उनमें से एक थे जिन्होंने उपदेशों के साथ क्रियात्मक रूप से भी सिद्व कर दिया कि गुरुजी (स्वामी रामकृष्ण परमहंस) द्वारा बताये गए अनुभवों के अनुसार वेदान्तीय शिक्षा व्यवस्था अपनाकर उसे वर्तमान जीवन से सम्बद्व कर दिया जाये तो भारत की समस्या आसानी से सुलझ सकती है। स्वामी जी ने भावात्मक और क्रियात्मक वेदान्त का प्रचार किया और हिन्दू धर्म को उतंग शिखर तक पहुंचाया। सीखने के सन्दर्भ में उनका विचार था कि प्रत्येक प्राणी में आत्मा विराजमान है और आत्मा को पहचानना ही धर्म है। उनका मानना था कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को शक्तिहीन व शून्य बनाती है। स्वामी जी का कथन है कि "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्वि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।" स्वामी जी के अनुसार उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है। स्वामी जी ने महिलाओं व पिछड़े वर्ग की शिक्षा पर बल दिया है। भारत सरकार स्वामी जी के शिक्षा के क्षेत्र में लिए स्वप्न को साकार करना चाहती है। प्रयास भी कर रही है परन्तु शतप्रतिशत विजय हासिल करने में विफल हो रही है क्योंकि भ्रष्टाचार के साथ अन्य चुनौतियां भी सरकार के सामने हैं।

भूमिका

स्वामी विवेकानन्द भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सच्चे उद्घोषक थे। इनकी रुचि पूजा-पाठ, धर्म-कर्म व धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में थी। इनका जन्म 12 फरवरी 1863 ई0 को कलकत्ता के सिमुलिया पल्वी में हुआ था। स्वामी जी बड़ी कुशाग्र बुद्धि वाले इन्सान थे। बहुत ही कम आयु में इन्होंने साहित्य, इतिहास के साथ-साथ दर्शन का भी विस्तृत अध्ययन कर लिया था। इनके स्कूल के प्रधानाचार्य ने इनके बारे में कहा था कि नरेन्द्र दत्त वस्तुतः प्रभावशाली हैं। मैंने विश्व के विभिन्न देशों की यात्राएं की हैं परन्तु किशोर अवस्था में ही इनके समान योग्य एवं महान क्षमताओं वाला युवक मुझे जर्मन विश्वविद्यालयों में भी नहीं मिला। इनका बचपन का नाम नरेन्द्र दत्त था तथा इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था। इनका परिचय प्रधानाचार्य हेस्ली ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी से करवाया। स्वामी जी का नरेन्द्र पर गहरा प्रभाव पड़ा। छः साल तक नरेन्द्र जी ने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद

ही नरेन्द्र से स्वामी विवेकानन्द बन गए। सन् 1886 में स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और अपने गुरु के उपदेशों का अमेरिका, यूरोप तथा सीरिया में प्रचार किया। उनका मत था कि वेदान्तीय शिक्षा की व्यवस्था आपनाकर उसे वर्तमान जीवन से सम्बद्ध कर दिया जाये तो भारत माता की समस्या आसानी से सुलझ सकती है। स्वामी जी ने भावात्मक और क्रियात्मक वेदान्त का प्रचार कर हिन्दु धर्म के परचम को उच्च शिखर तक पंहुचाया। सन् 1893 में अमेरिका में भाषण के माध्यम से सभी धर्मावलम्बियों को प्रभावित किया और देश का मान-सम्मान और गर्व बढ़ाया।

जीवन दर्शन

स्वामी विवेकानन्द का मानना है कि भीरू, म्लान और उदासीन व्यक्ति जीवन में कोई कार्य नहीं कर सकते। कार्य केवल वही व्यक्ति कर सकते हैं जो वीर, निर्भय और कर्मठ हैं। स्वामी जी ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए सन्देश दिया था कि जीवन संग्राम के वीर बनो। कहो कि तुम निर्भय हो। भ्रम का त्याग करें क्योंकि भय मृत्यु है। भय पाप है। भय अधोलोक है, भय अधर्मिकत्य है। भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है।

शिक्षा

शिक्षा दर्शन के बारे में स्वामी का कथन था कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं सिखाता है, प्रत्येक अपने आप ही सीखता है। शिक्षा की आवश्यकता को अनुभव करते हुए बताते हैं कि हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। स्वामी जी सैद्धांतिक शिक्षा की बजाए व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक जोर देते थे। उनका सुझाव था, "तुमको कार्य के प्रत्येक क्षेत्र को व्यावहारिक बनाना पड़ेगा। सम्पूर्ण देश का सिद्धान्तों के ढेरों ने विनाश कर दिया है।"

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी जी ने लिखा है कि "यदि शिक्षा का अर्थ सूचना से होता, तो पुस्तकालय संचार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्वकोश ऋषि बन जाते।" स्वामी जी ने शिक्षा का अर्थ बताते हुए लिखा है कि "शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।"

शिक्षा के उद्देश्य

1. व्यक्ति का शारिरिक एवं मानसिक विकास करना।

2. व्यक्ति में नैतिक दायित्व, विश्व बन्धुत्व, विश्व चेतना, मानव प्रेम और समाज सेवा के गुणों का विकास करना।

3. मनुष्य में धार्मिक भावना का विकास करना।

4. शिक्षा व्यक्ति को पूर्णत्व प्रदान करती है।

5. मनुष्य की आन्तरिक एकता को बाह्य जगत के प्रकट करना ताकि वह अपने आप को अच्छी तरह समझ सके।

6. मनुष्य के आत्म-विश्वास, श्रद्धा व त्याग की भावना का विकास करना है।

7. शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य चरित्र का निर्माण करना है।

8. व्यक्ति को मन, वचन व कर्म से पवित्र करना।

9. प्रत्येक व्यक्ति को उठाना, जगाना तथा उस तक बढ़ने में सहायता प्रदान करना जब तक वह अपने पैरों पर खड़ा न हो जाये।

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2013

पाठ्यक्रम

पाठ्क्रम के बारे में स्वामी जी का विचार है कि "हमें अपने ज्ञान के विभिन्न अंगों के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान के अध्ययन की भी आवश्यकता है, हमें प्राविधिक शिक्षा और उन सब विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है जिनसे हमारे देश के उद्योगों का विकास हो और नौकरियां खोजने के बजाए अपने स्वयं के लिए पर्याप्त धन अर्जन कर सकें और दुर्दिन के लिए भी कुछ बचा भी सकें। स्वामी जी का मत था कि पाठ्यक्रम में धर्म, दर्शन, पुराण उपदेश, श्रवण, कीर्तन और साधु संगति, समाज सेवा, भूगोल, अर्थशास्त्र, गणित, राजनैतिक शास्त्र, खेलकूद, व्यायाम, गृहविज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा, विज्ञान, कृषि, इतिहास, प्राविधिक विशय व व्यावसायिक विषय आदि होने चाहिए ताकि उन सभी विषयों का ज्ञान बालक को हो जाए जिसमें लौकिक समृद्धि और आध्यात्मिक पूर्णता लाने में सहायता मिल सके।

शिक्षण विधि

स्वामी जी ने आध्यात्मिक (वेदान्तीय) शिक्षण विधि पर बल दिया है। उनका मानना था इस विधि से गुरु और शिष्य के सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ होते हैं।

शिक्षक का स्थान

स्वामी जी का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वयं ही शिक्षक है। शिक्षक के बारे में लिखा है कि "शिक्षक एक दार्शनिक, मित्र तथा पथ-प्रदर्शक है। जो बालक को अपने ढंग से अग्रसर होने के लिए सहायता प्रदान करता है।" अर्थात इनका मानना था कि शिक्षक बालक का पथ प्रदर्शक, मित्र एवं परामर्शदाता होना चाहिए।

जन साधारण शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द जी का मानना है कि देश के विकास व उन्नति के लिए देश की जनता का शिक्षित होना अति आवश्यक है। इसमें स्वामी जी का मतह है कि मैं जन साधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप समझता हूं। यह हमारे पतन का मुख्य कारण हे। जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर उपयुक्त शिक्षा, अच्छा भोजन तथा अच्छी सुरक्षा नहीं प्रदान की जायेगी तब तक प्रत्येक राजनीति बेकार सिद्ध होगी।

सधारण शव्दों में हम कह सकते हैं कि स्वामी जी ने जन साधारण शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है और मत था कि जनता को शिक्षित करने के लिए गांव-गांव जाना चाहिए।

स्त्री शिक्षा

स्त्री की शिक्षा पर बल देते हुए स्वामी जी ने कहा कि "पहले स्त्रियों को शिक्षित करो, तब वे आपको बतायेंगी कि उनके लिए कौन से सुधार आवश्यक हैं। उनके बारे में तुम बोलने वाले कौन हो" ? स्वामी जी मानते थे कि स्त्री शिक्षा ही समाज का उदार व पतन का कारण बनता है। यदि नारी शिक्षित है तो उसका घर, समाज और देश शनैःशनैः शिक्षित हो जायेगा। यदि अशिक्षित है तो पहले घर, समाज और फिर देश का पतन हो जायेगा। स्त्री की शिक्षा को स्वामी जी ने उच्च स्थान दिया है तथा स्त्री की दीनता, हीनता व पराधीनता का कटर विरोध किया है। उनका मत था कि यदि शिक्षा एक स्थान हो तो नारी को दो और शिक्षित करो क्योंकि यदि एक स्त्री शिक्षित होगी तो वह हजारों बच्चों को शिक्षत करेगी जो उसके सम्पर्क में होंगे। अतः स्वामी जी नारी शिक्षा के समर्थक थे।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि स्वामी

विवेकानन्द जी का स्वप्न शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा था। हमारी भारत सरकार इस स्वप्न को पूरा करने के प्रयास कर रही है परन्तु सरकार इस स्वप्न को शत प्रतिशत पूरा करने में असमर्थ अनुभव कर रही है क्योंकि सरकार के सामने काफी समस्याएं व चुनौतियां हैं जों निम्नवत् हैं :

1. जातिवाद - भारतीय समाज में जाति प्रथा प्रचलित है जो देश की उन्नति व विकास के लिए सबसे बड़ी बाधा है तथा यह राष्ट्रीय एकता के विपरीत है जो स्वामी जी के स्वप्न के विपरीत है।

2. कोई समाज का आदर्श नहीं है - भारतीय समाज का कोई आदर्श नहीं है, यह आदर्शहीन है।

3. नेतृत्व की कमी - भारतीय समाज में अच्छे नेताओं की कमी है। सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठा सकें, ऐसे नेताओं के नेतृत्व की कमी है।

4. सामाजिक शोषण - भारतीय समाज में शोषण का बीज बोया गया है। लोग अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का शोषण करने में शर्म नहीं कर रहे हैं।

5. अन्याय - भारतीय समाज के न्याय शब्द विलुप्त होता जा रहा है। अन्याय का बोलबाला बढ़ रहा है। लोग न्याय के लिए आन्दोलन कर रहे हैं जो स्वामी जी के स्वप्न के विपरीत है।

6. लोभ और लालच - लोग दिन प्रतिदिन लालची बनते जा रहे हैं। अपने स्वार्थ के लिए वे किसी भी हद तक जा सकते हैं ।

7. विज्ञान व तकनीकी का विकास - विज्ञान व तकनीकी का विकास देश की उन्नति के लिए किया गया है। विज्ञान व तकनीकी ने व्यक्ति को बड़ा शक्तिशाली बना दिया है। व्यक्ति के हाथ में काफी शक्ति प्रदान कर दी है। व्यक्ति इसका उपयोग कम जबकि दुरुपयोग ज्यादा कर रहा है। विज्ञान व तकनीकी ने देश में प्रतियोगिता, जड़वाद और असभ्यता को जन्म दिया। बम बनाकर व पिस्तौल बनाकर मानव जाति का विनाशक बन गया है।

8. बर्बरतापूर्ण दृष्टिकोण - व्यक्ति रातों-रात धनी बनने का स्वप्न देख रहा है। वह धनी होने के किसी बुरे कार्य करने से नहीं डर रहा है। वह किसी भी कीमत पर धनी बनना चाहता है। इस तरह बुरा कार्य कर रहा है जो असभ्यता का प्रतीक है।

9. दिशाहीन शिक्षा - वर्तमान शिक्षा दिशाहीन है। बच्चे पढ़ तो रहे हैं, स्कूल कालेज व विश्वविद्यालय सरकार काफी मात्रा में खोल रही है परन्तु बच्चे भी नहीं जानते कि वे क्यों पढ़ रहे हैं तथा सरकार भी नहीं जानती कि वे स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों को क्यों खोल रही है। हमारी शिक्षा दिशाहीन है।

10. उद्योगीकरण व शहरीकरण का प्रभाव - उद्योगीकरण व शहरीकरण के कारण लोगों की जीवन शैली ही बदल गई है। लोग गांवों से आकर शहरों में बस रहे हैं।

11. दुराचार दृष्टिकोण - लोग समाज में दुराचार बढाते जा रहे हैं। कोई भय उनको नहीं है। समाज में इन लोगों के कारण अशान्ति का वातावरण बन चुका है। इन लोगों में दुराचार दृष्टिकोण विकसित हो चुका है। बुरा कार्य करना इनके बाएं हाथ का खेल बन चुका है जो सामाजिक कूल्यों के बिलकुल विपरीत है।

12. सामाजिक अनुशासनहीनता - सामाजिक अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। हिंसा का वातावरण बनता जा रहा है। समाज में सामाजिक

आचरण, सामाजिक मूल्यों को कोई स्थान नहीं है। बड़ों का कोई आदर नहीं है अर्थात् लोग अत्यंत दुःखी हें, सामाजिक मूल्यों का हनन हो रहा है।

13. गरीबी - समाज में गरीबी का बोलवाला है। केवल चंद लोगों के पास पैसा हैं अन्य लोग दो समय की रोटी के लिए तड़प रहे हैं। बड़े लोग बड़े-बड़े घोटाले कर रहे हैं यदि पकड़े भी जाते हैं तो पैसा या घोटाला कभी वापस नहीं आता। हिंसक कार्य समाज में हो रहे हैं। गरीबी खत्म होने के बाजए बढ़ती जा रही है। अमीर-अमीर होता जा रहा है और गरीब-गरीब होता जा रहा हे।

14. उद्देश्यहीन शिक्षा - हमारी वर्तमान शिक्षा उद्देश्यहीन है। इसका कोई मुख्य उद्देश्य नहीं है। केवल शिक्षा प्रदान करना ही उद्देश्य माना जा रहा है।

15. चरित्र निर्माण शिक्षा का अभाव - स्वामी विवेकानन्द जी का स्वप्न था कि हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण व मस्तिष्क शक्ति बढ़ती है। लेकिन वर्तमान शिक्षा प्रणाली ऐसी नहीं है क्योंकि मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा प्रणाली में स्थान कम है।

16. शिक्षा का व्यापारीकरण - स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा के व्यवसायीकरण पर बल दिया था जबकि वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में व्यापारीकरण पर बल दिया जा रहा है जिससे शिक्षा का स्तर गिरा है तथा समाज में मूल्यों का हनन हुआ है।

17. नैतिक शिक्षा की कमी - नैतिक शिक्षा बच्चों में मूल्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है परन्तु नैतिक शिक्षा का स्थान पाठ्यक्रम है।

18. सामाजिक असंगठन - समाज एकजुट होने के बजाए असंगठित होता जा रहा है। समस्त परिवार में परिवर्तन होता जा रहा है। जातिवाद, क्षेत्रवाद व भाषावाद ने समाज की शक्ति को कमजोर करके असंगठित कर दिया।

19. वैवाहिक असंगठन - विज्ञान व तकनीकी के विकास ने वैवाहिक संगठन को प्रेरित किया है। विवाह विच्छेद बढ़ता जा रहा है। मोबाइल व टैलीविजन ने विवाह बन्धन पर काफी हद तक प्रभाव डाला है।

20. राजनैतिक शोषण - राजनेता अपने वोट के लिए साधारण जनता को गुमराह कर रहे हैं और अपना फायदा ले रहे हैं। जनता को राष्ट्रीय हित के विकास के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि देश में एकता बनी रहे परन्तु राजनेता विपरीत दिशा में कार्य कर रहे हैं। जातिवाद, भाषावाद व क्षेत्रवाद का सहारा लेकर राजनेता पूर्ण रूप से प्रेरित करर्य कर रहे हैं।

21. मनोवैज्ञानिक हलचल - वर्तमान समाज में देखा जा रहा है कि हमारे नौजवान शान्त नहीं हैं। वे केवल दिशाहीन हैं, बेरोजगार हैं, गुस्से में हैं, बेवश हैं, लाचार हैं, तनाव में हैं। जब हमारे नौजवान ही ऐसे हैं तो देश कैसा होगा यह विचारणीय प्रश्न है। इस मनोवैज्ञानिक हलचल के कारण नौजवान इस तरह की प्रवृतियों के दास बन चुके हैं।

22. स्कैंडल और अनुशासनहीनता - देश में आतंकवाद, हिंसा और स्कैंडल (अपमान, निंदा) और अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है जिसमें राजनीति का हस्तक्षेप देखने को मिल रहा है जिसके कारण राष्ट्रीय विकास, एकता, स्वतंत्रता और प्रभुसत्ता दांव पर लग गयी हैं।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द जी के कार्य व विचारों का गहन अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष

पर पहुंचे हैं कि देश की सरकार अपने देश की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने का भरसक प्रयत्न कर रही है। कई प्रकार के आयोग व कमेटियों का गठन किया है और किया जा रहा है ताकि शिक्षा में भारतीय समाज की आवश्यकताओं के अनुसार सुधार लाया जा सके। एक्ट 2009 जिसे आर.टी0ई. के नाम से जाना जाता है, पूरे भारत में लागू कर दिया है ताकि एलिमैंटरी शिक्षा सभी बच्चों को फ्री दी जाये। इसके अलावा कई स्कूल, कालेज व विश्वविद्यालय खोल दिये गए हैं और खोले जा रहे हैं ताकि स्वामी विवेकानन्द जी का स्वप्न पूरा हो सके। ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है ताकि हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर हो। सभी नागरिक शिक्षित हों तथा शिक्षा, चरित्र निर्माण, मस्तिक शक्ति को बढ़ाने व लोगों को अपने पांव पर खड़ होने के लिए शक्ति प्रदान करे।

सन्दर्भ

1. बंगा, चमल लाल (ई डी), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, नंगल टाऊन (पंजाब) पसरिया पब्लिकेशन।
2. मर्थी, एस.के. (ई.डी) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, लुधियाना, टंडन ब्रदर्ज।
3. नंदा, एम.के. नेलोफर और नन्दा वीमपल (ई.डी), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, जालंधर, माडर्न पब्लिशर।
4. शर्मा, ओ.पी. (ई.डी.) एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया, जालंधर, मार्डन पब्लिशर
5. भाटिया, के.के. एण्ड सी.एल. नारंग (ई.डी), प्रिंसिपल आफ एजुकेशान, लुधियाना, टंडन ब्रदर्ज
6. वलिया, जे.एस. (ई.डी), टरैन्डस इन एजुकेशन, जालंधरः पौल पब्लिशर